जागृति

— एक कदम सृजन की ओर

5 कविता

17 कहानी

25 विविध

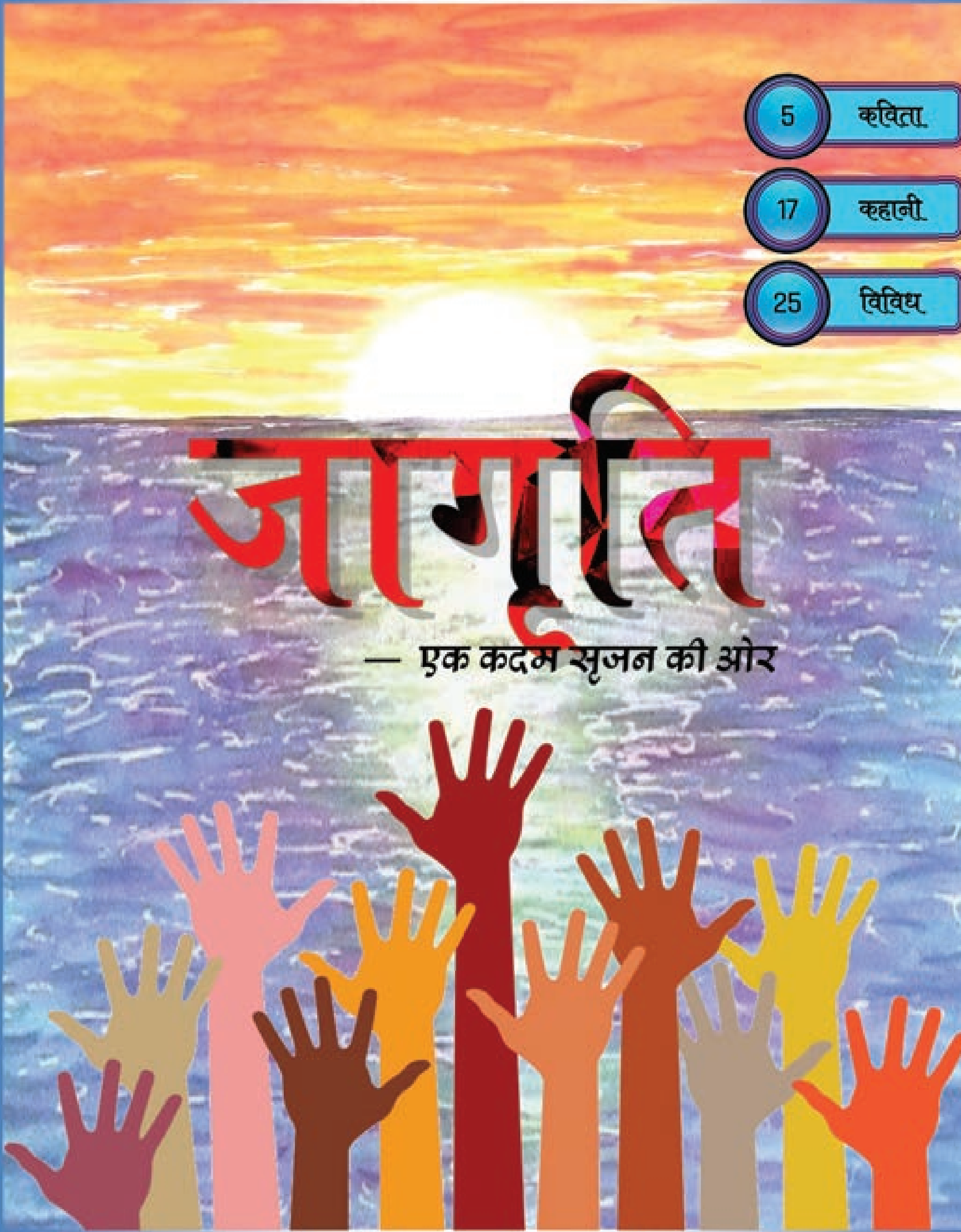

जागृति

... एक कदम सृजन की ओर

मुख्य उद्योक्ता

डा. अशोक कुमार होता

(उपमहानिदेशक एवं एस.आई.ओ.)

परीकल्पना एवं सरंचना

श्रीमती सुजाता दास

वरिष्ठ निदेशक (आई.टी)

सम्पादना

सुश्री अलका प्रधान

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सह-सम्पादना

श्री दीपक शर्मा

वैज्ञानिक/तकनीक सहायक - ए

श्री दिव्य कीर्ति बाजपेई

वैज्ञानिक/तकनीक सहायक - बी

प्रकाशन

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र

(ओड़िशा राज्य केंद्र, भुवनेश्वर)

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
MINISTRY OF ELECTRONICS AND INFORMATION TECHNOLOGY
Digital India
NIC National Informatics Centre

प्रस्तावना

हिन्दी पखवाड़े के उपलक्ष्य पर हमारे कार्यालय में हिन्दी पत्रिका 'जागृति' प्रकाशित होने जा रहा है, जो हम सभी के लिए अत्यंत हर्ष तथा गौरव की बात है। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशन प्रयास बहुत ही सराहनीय है।

हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, सभ्यता और राष्ट्रीय एकता का भी प्रतीक है। जागृति के माध्यम से जहां एक ओर हिंदी के संवर्धन और विकास को सहायता मिलेगी, वहीं दूसरी ओर हमारे प्रबुद्ध तथा सृजनशील व्यक्तियों को अपने विचारों को, भावनाओं को अभिव्यक्त करने का एक सुनहरा अवसर प्राप्त होगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है जागृति पत्रिका हिन्दी के प्रति एक सकारात्मक सोच लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। कार्यालय के सभी पदाधिकारियों द्वारा पत्रिका प्रकाशन के लिए दिये गए रचना उनकी उत्सुकता, कलात्मकता, सृजनशीलता तथा हिन्दी के प्रति बढ़ती रुझान का स्वरुप है। हिंदी की सरस धारा इसी प्रकार जागृति पत्रिका के माध्यम से निरंतर बहती रहेगी।

जागृति पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों, संपादकमंडल तथा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष्य रूप से जुड़े सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके सुंदर भविष्य के लिए शुभाकांनाएँ देता हूँ।

जागृति हमारे जीवन में जागरुकता लाए। जागृति हमें एक भाषा के प्रेम भाव की ओर, एक भावनाओं के आवेग की ओर, एक आत्म बोध की प्रशांति के ओर ले चले, यही हमारी कामना है।

डॉ. अशोक कुमार होता
उप-महानिदेशक एवं राज्य सूचना-विज्ञान अधिकारी
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

सम्पादकीय

हमारे लिए यह बड़ी खुशी की बात है कि कार्यालय में **'जागृति'** पत्रिका का प्रकाशन होने जा रहा है। कोई भी कार्यालयीन पत्रिका रचनाकारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ साथ व्यक्ति के सोच -विचार को एक नई ऊर्जा प्रदान करती है। हिन्दी पत्रिका जागृति का यह पहला अंक हमारे कार्यालय मे राजभाषा की गति को निरंतरता प्रदान करेगी एवं इसके समृद्ध विरासत को गौरवान्वित महसूस कराएगी।

जागृति के इस अंक के प्रकाशन में योगदान हेतु मैं सभी को, विशेष कर रचनाकारों एवं इसके सम्पादन से जुड़े सभी सदस्यों को, धन्यवाद देती हूँ एवं सभी से आशा करती हूँ कि रचनाओं को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव हमें दें ताकि आगे पत्रिका को और अधिक उच्च स्तरीय बनाया जा सके।

शुभकामनाओं के साथ

डॉ. अलका प्रधान

(सम्पादिका)

कविता
(अनुक्रमणिका)

शीर्षक	कवि	पृष्ठ
ऐसे ही एक हिंदी दिवस पर...	श्री ललाटेन्दु दाश	6
कहाँ गए वो गुजरे पल	श्रीमती संजुक्ता प्रधान	7
कालवैशाखी और जिंदगी	चौधरी स्वर्णप्रभा पंडा	8
सफर	श्री दिलीप कुमार गुप्ता	9
ठहराव	श्री दिलीप कुमार गुप्ता	9
सफर	श्री सिद्धांत हासदा	10
वीर जवान	श्री अक्षय मिश्र	11
वन्दन	डॉ. आशीष कुमार महापात्र	12
बढ़ता चल तु बढ़ता चल	डॉ. अशोक कुमार होता	13
करोना काल	मोहम्मद मुजिबुल्ला खान	14
अंतरद्वंद	चौधरी स्वर्णप्रभा पंडा	15
पञ्चमणि	दिव्य कीर्ति बाजपेई	16

श्री ललाटेन्दु दाश
वरिष्ठ निदेशक (आई.टी.)
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

ऐसे ही एक हिंदी दिवस पर...

जा रहा था दिल्ली
गाड़ी में एक बार
सामने मेरे बैठे थे
एक पगड़ीवाले सर्दार !!
सर्दारजी थे तो चुप
लेकिन बात करने को मन
मेरा भी ऐसा था हिंदी में
आधा अधूरा ज्ञान !!
सर्दारजी अपनी चुप्पी तोड़ी
और बात किये मेरे साथ
कम हिंदी ज्ञान होते हुए भी
बात किया उनके साथ !!
मेरी बात वो सुनते रहे
लेकिन कुछ ना समझते थे
इधर उधर देखते देखते
सर हिलाते थे !!
पूछा तो मैने "भाई साहब,
क्यों हो परेशान ?
सुनकर भी न सुने
दिया ना कोई ध्यान !!
कान के पास आ के
सर्दार बोले, 'अरे सुनो यार !
आधी हिंदी मैं समझ ना पाऊ
पुरी हिंदी में बोलो यार ' !!
डर डर के थोड़ा मुस्कुरा के
मैंने बोला, 'हो सरदार !
आधा हिंदी जब समझ न आए
तो पूरा हिंदी मैं कैसे यार ?' !!
हँसते हँसते सर्दार जी कहे
खुश कर दिए आप
गलत हो या सही, हिंदी में
बात किये मेरे साथ !!
आज ही है हिंदी दिवस
राष्ट्र गरिमा का दिन
चलें हम सब सीखते रहें
बनेंगे हिंदी में प्रवीण !!
यही है हमारे देश की भाषा
हमारी राष्ट्र भाषा
ज्यादा से ज्यादा बोलेंगे हिंदी
यही है आज की आशा !!
जितना भी होगा हिंदी बोलो
जरूर बोलना यार,
आज नहीं तो कल होगा
जरूर अगले साल !!

चलो ठीक है, फिर मिलेंगे हम दोनों एकबार,
बात करेंगे पुरे हिंदी में, ऐसे ही एक हिंदी दिवस पर !!

कहाँ गए वो गुजरे पल

कहाँ गए वो दिन जब तुम माँ का पल्लू न छोडते थे
माँ माँ पुकार कहते ना थकते थे
खुशी के पल तो माँ, डर लगता तो माँ
बाहार से आओ तो माँ, घर के अंदर माँ
जब कुछ चाहिए माँ, बीमारी हो तो माँ
उस पल का पूर्ण आनंद लिया मैंने
मानो मेरी अहमियत आसमान छू ली

फिर आया ये किशोरावस्था, बचपन कहाँ खो गया तेरा
माँ की पुकार को मैं तरसने लगी
अब मेरा बच्चा बोलेगा यही सोचती रही
पर तुम माँ का अस्तित्व ही भूल गए
ये कैसा परिवर्तन, घर का माहौल बदल गया
बिस्तर ज्यों के त्यों, सम्पूर्ण घर ज्यों का त्यों
बचपन की किलकिलाहट, शोरशराबा कही खो गया
पूरा घर सुनसान, मानो जीवन विहीन हो गया

कुछ बोलो तो तुम्हारा चिड़चिड़ाना
मैं ना समझू ये उम्र का गणित
कभी लगे किसी ने काला जादू तो नही किया मेरे बच्चो पर
कभी लगे किसकी नजर लग गई मेरे घर संसार को
अभी भी मुझे आस है मेरे बच्चों को मेरी याद आएगी
वो वापस माँ माँ कह कर पुकारेंगे
वो पुराने दिन वापस आएंगे

श्रीमती संजुक्ता प्रधान
उप निदेशक (आई.टी.)
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

श्री दिलीप कुमार गुप्ता
वैज्ञानिक - बी
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

ठहराव

ढल गई शाम अगर
रात ये सुहानी होगी
खामोशी है आज मगर
कहानी कल नई होगी
ठहर गए हैं कदम आज
कल फिर चाल नई होगी
कुछ पल ठहर गए तो क्या
कल को फिर एक नई रवानी होगी
ठहरना भी तो जरुरी है सफर में
पता तो चलता है - कहाँ जा रहे थे
ठहराव आता नही हमें रोकने को
यही तो है जो आता है हमें हमसे मिलाने को
खामोशी है आज मगर
कहानी कल नई होगी .. !!

सफर

जाने कितने ख्वाब हैं इन आँखों में
एक एक लाजवाब हैं लाखों में
कितने पूरे होंगे कितने रह जायेंगे अधूरे
हर कदम पर लगे हैं हज़ारों पहरे
सफर नही मांगता कि सफर पूरा हो
मगर हर हाल में चलना जरुरी है
हमसफ़र भी तो मिलते हैं राह में
बिछड़ जाते हैं फिर से मिलने कि चाह में
उफ़ ये मुश्किल भरी रातों में
बहक न जाना कही जज्बातों में
टूटे सपने फिर से पिरो लेना
दिल करे तो खुल के रो लेना
समेट लेना खुद को एक बार फिर से
आखिर चलना है सफर पे एक बार फिर से ..!!

कालवैशाखी और जिंदगी

श्रीमती स्वर्णप्रभा पंडा
वरिष्ठ निदेशक (आई.टी.)
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

वैशाख के मौसम में सुरज जब ढल रहा था
खिड़की के कोने से मैं एक कहानी देख रहा था..

एक तरफ जहाँ हम महामारी से लड़ रहे थे..
दुसरे तरफ किसान परिवार बेवश होते दिख रहा था..

प्रकृति से लडाई में भला कौन जीत सका है
किसान परिवार सहमा हुआ दिख रहा था..

एक तरफ रोग का भयंकर तांडव
दुसरे तरफ उसे जीविका का चिंता सता रहा था

फसल नष्ट हो गये तो गुजारा कैसा होगा
यही सोचकर वह आसमान को देख उम्मीद बांध रहा था

साहस और धैर्य का एक नैतिक उदाहरण
वह किसान मुझे खिडकी के कोने से समझा रहा था

परिस्थितियों से हारकर कभी भागो नही
कालवैशाखी के बादलों के पार वह उगता सूरज देख रहा था

एसी ही है जिदंगी की परिभाषा
प्रश्न बदल रहे हैं विश्वास के साथ मेरा उत्तर भी बदल रहा था...

श्री सिद्धांत हासदा
वैज्ञानिक / तकनीकी सहायक - ए
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

सफ़र

कई रास्ते गुजर के मुझे
मंजिलें कई देखना है
रुकना नही है
बस छू के आगे बढ़ जाना है।
पुकारती रहेगी मंजिल
सोने के पिंजरे से
मुड़ना नही है
आगे बढ़ जाना है।।
ऐसे ही चलते चलते
एक रोज शाम होगी
जब पांव नही,
मेरे सांसें विराम लेंगी।
उसी रोज बादल गरजने लगेंगे
बिजली रिहा होगी
हवाएं विद्रोह करेंगी
और मूसलाधार बारिश होगी ।।
उसी शाम एक आकाशवाणी होगी
"हासदा तुम्हें अब बीज बन जाना है"
रात भर धरती के कोख में सो के
सुबह होते ही मुझे देवदारु बन जाना है ।।

वीर जवान

मैं जगा रहूँगा रात-दिन,
चाहे धूप हो या बरसात हो,
चाहे तूफान आये या पूस की ठंढी रात हो,
मैं खड़ा रहूँगा सरहद पर सीना ताने,
चाहे गोलियों की बौछार हो,
चाहे न खाने को कुछ भी आहार हो,
अपने "वतन" की खातिर मैं,
हर दर्द हँस के सह लूँगा,
निकले जो खून बदन से मेरे,
मैं खुश हो लूँगा,
कभी आँखों में रेत भी चल जाए तो,
वादा है, मेरी पलकें नही झपकेंगी,
लहू भी जम जाए अगर जो सीने में,
मेरे हाथ बंदूक नीचे नही रखेगी,
दुश्मन के घर मेरे "वतन" के चट्टानों का
एक टुकड़ा भी न जा पायेगा,
जमीदोज कर दूँगा मैं काफ़िर तुमको,
जो मेरी धरती की तरफ आँख उठाएगा,
कितना भी दुर्गम रास्ता हो,
किंचित भी नही डरूँगा मैं,
चप्पे-चप्पे पर रहेगी नजर मेरी,
देश के गद्दारों पर अब रहम नही करूँगा मैं।

श्री अक्षय मिश्र
निदेशक (आई.टी.)
एन.आई.सी., झारसुगुड़ा

डॉ. आशीष कुमार महापात्र
वरिष्ठ निदेशक (आई.टी.)
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

वन्दन्

देखो देखो
कौन फूलों में रंग लगाया
कौन पंखुड़ियों में महक डाला
रंग विरंगे फूल खिला कर
सारी दुनिया का रूप सजाया। 1

सोचो सोचो
कौन बुटे का दाना सजाया
नारियल में पानी किसने डाला
खट्टे मीठे फलों से भरे
सारी दुनिया को खाना खिलाया। 2

गौर करो
कौन पंछियों को स्वर दिलाया
मोर की पूंछ को किसने सजाया
सूर तान के चहचहाहट से
सारी दुनिया में आनंद फैलाया। 3

विचार करो
कौन मगरमच्छ, मछली बनाया
कौन नदियाँ, सागर बहाया
कल कल, छल छल बहते हुए
सारी दुनिया को जीना सिखाया। 4

फिक्र करो
कौन गगन में तारे चमकाया
किसने सूरज, चाँद बनाया
दिन और रात में उजाला फैला कर
सारी दुनिया को राह दिखाया। 5

नमन करो
न जाने, न समझे, हे चित्रकार
तुम हो स्रष्टा, तुम विधाता,
तुम ही सबसे बड़े कलाकार
तुम्हारे चमत्कार चारों तरफ हैं
शत शत वंदन तुम्हें करते हैं। 6

बढ़ता चल तु बढ़ता चल

डॉ. अशोक कुमार होता
उप-महानिदेशक एवं एस.आई.ओ.
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

जिंदगी के इस राह में
बढ़ता चल तु बढ़ता चल,
पता नही,
कब और कैसे !
मिल जाएगा मंजिल
तु बढ़ता चल

क्या पाना है क्या खोना है,
खाली हाथ तो जाना है
पता नही,
भटकते हैं क्यों ?
साधना के पथ पर
तु बढ़ता चल

कौन है बंधु, कौन है भ्राता
कौन है माता, कौन है पिता,
पता नही,
बंधते हैं कक्यों ?
माया तोड़ कर
तु बढ़ता चल

ना धन है ना ज्ञान है,
ना पद है ना मान है,
पता नही
खंगालते हो क्यों ?
निवृत्ति के पथ पर
तु बढ़ता चल

मंजिल दूर है, राहें लम्बी है,
साँस धीमी है, कमर झुकी है,
पता नही,
डरते हैं क्यों ?
श्रद्धा, विश्वास के साथ
तु बढ़ता चल

हृदय खोल दो, भक्ति से भर दो,
वचन मधुर हो, आँखो में प्यार हो
पता नही,
मंजिल खुद ही
आए तेरे पास
तु बढ़ता चल

मोहम्मद मुजिबुल्ला खान
निदेशक (आई.टी.)
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

करोना काल

हैं करोना की दहशत की आतिश में लोग
पड़ गये वक़्त की आज़माइश में लोग
हैं दवा की बहुत ख़ोज ख़्वाहिश में लोग
हैं करोना मिटाने की कोशिश में लोग .
है उदासी में बीमार का रास्ता
सूना सूना है संसार का रास्ता ।

वक़्त-ए- मुश्किल के हाथों में मज़दूर हैं
ग़मज़दा शहर गाँव में मज़दूर हैं
घर से बेघर भी लाखों में मज़दूर हैं
खैर कर मौला, राहों में मज़दूर हैं .
दुख में मौला है ख़ुद्दार का रास्ता
सूना सूना है संसार का रास्ता ।

दौरे हाज़िर में मायूस हर रात है
मौज मस्ती ना तफ़री की सौगात है
ढोल बाजा न शादी की बारात है
लोगों में अब न रस्म- ए- मुलाक़ात है .
हाल- ए- ख़स्ता है घरबार का रास्ता
सूना सूना है संसार का रास्ता ।

भीड़ दिखती नही अब है बाज़ार में
अब दुकानें नही खुलती हैं धार में
चल रही है तेजारत बडी हार में
सारा आलम है सन्नाटे की मार में .
ख़ाली ख़ाली है बाज़ार का रास्ता
सूना सूना है संसार का रास्ता ।

अब है उलझन में अफ़सोस में बाग़बाँ
हो गया उसका गुलशन वीराँ ही वीराँ
बाग़ को दे चमक अए ख़ुदा मेहरबाँ
यह दुआ करते हैं बाग़ के क़द्रदाँ .
है बहुत ग़म में गुलज़ार का रास्ता
सूना सूना है संसार का रास्ता ।

हर अदा है तेरी जो निराली ख़ुदा
तू मिटादे यह आलम वबाली ख़ुदा
कर करोना से दुनिया को ख़ाली ख़ुदा
तेरी रहमत के हम हैं सवाली ख़ुदा .
करदे आसान ग़मख़्वार का रास्ता
सूना सूना है संसार का रास्ता ।

अंतर्द्धंद

चौधरी स्वर्णप्रभा पंडा
निदेशक (आई.टी.)
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

मधुर चांदनी की किरणों में सपने बहुत देखे हैं
क्या इन सपनों को पूरा करने की हिम्मत तू दिखलायेगा
घना अँधेरा यह संसार तुझे अपने मार्ग से भटकायेगा
क्या मार्ग से विच्युत न होकर एकलव्य तू बन पायेगा
इस अंतरद्वंद की सीमा को क्या कभी तू लांघ पायेगा ।।

कर्म करने तू निकल पड़ा क्योंकि सफर का अंत अभी हुआ कहाँ
इंद्रप्रस्थ के राजभवन में क्या अपना जौहर तू दिखा पायेगा
भले ही तू अपनी संतुष्टि को सरल तरीके से पहचान चुका
प्रतिस्पर्धा के इस युग में क्या तू अपने आपको रोक पायेगा
इस अंतरद्वंद की सीमा को क्या कभी तू लांघ पायेगा ।।

इंद्रप्रस्थ के राजभवन में बहुत से भटके राही मिलेंगे
इन दिशाहीन सम्प्रदायों में क्या तू अपना परिचय ढूंढ पायेगा
छलकपट, द्वेषभाव ,ईर्ष्यापग-पगपर तुझे मिलेंगे
निष्काम कर्म करते हुए क्या तू परिणामतक पहुँच पायेगा
इस अंतरद्वंद कीसीमा को क्या कभी तू लांघ पायेगा ।।

भाग्य की यह कैसी बिडम्बना है विफल तेरे प्रयास हैं
क्या सच्चेगुरु का चयन तेरा निरर्थक हो जायेगा ,
एक बार तू अपनी चेतना को सजग और जागृत कर
तुझे भी मनुष्यरूपी परमहंस शीघ्र प्राप्त हो जायेगा
इस अंतरद्वंद की सीमा को क्या कभी तू लांघ पायेगा ।।

रिश्ते नाते कर्मक्षेत्र के बड़े ही सामान्य से ठहराव लगे
आगे बड़े ही रोचक मजेदार पीछे गहरे घाव लगे
इनरिश्तों के चक्रव्यूहको क्या कभी तू तोड़ पायेगा
बहुत सारे रथियों के बवंडर में क्या तू अभिमन्यु बन पायेगा
इस अंतरद्वंद की सीमा को क्या कभी तू लांघ पायेगा ।।

बहुतहु आ अब सोच विचार मेहनत हैअब एकमात्र आसार
धैर्य को धारण करते हुए कर्मयोगी तू बन जायेगा
प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत महसूस नही होगी
ब्रह्माण्ड में तपते सूरज की तरह तू भी उदीयमान बन जायेगा
इस अंतरद्वंद की सीमा को तू जरूर लांघ जायेगा
इस अंतरद्वंद की सीमा को तू जरूर लांघ जायेगा॥

दिव्य कीर्ति बाजपेई
वैज्ञानिक/तकनीक सहायक - बी
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

पञ्चमणि

निर्गुण निर्मल नित्य निरंतर, नंदीश्वर निकुंज-विहारी।
हे त्रिपुरारी कैलाश विहारी, पूजत तुम्हें सदा नर-नारी॥

मधुर महेश महाक्ष मनोहर, मुक्तेश्वर मौन-मुद्राधारी।
हे त्रिपुरारी कैलाश विहारी, पूजत तुम्हें सदा नर-नारी॥

शिव शंभू शंकर शशिशेखर, शिवापति सदा शुभकारी।
हे त्रिपुरारी कैलाश विहारी, पूजत तुम्हें सदा नर-नारी॥

विजयी विभवी वन्दित विश्वेश्वर, विश्वनाथ वर-मुद्राधारी।
हे त्रिपुरारी कैलाश विहारी, पूजत तुम्हें सदा नर-नारी॥

यति योगी युगीन यमान्तक, योगराज यक्ष-रूपधारी।
हे त्रिपुरारी कैलाश विहारी, पूजत तुम्हें सदा नर-नारी॥

कहानी
(अनुक्रमणिका)

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
कट्टी	क्षीरोद कुमार साहु	18
उपहार	श्रीमती ममता खमारी	21
पहाड़ों में कुछ अनुभूति (संस्मरण)	सुश्री स्निग्धा आचार्य	22

कट्टी

ओड़िआ मुल लेखा :
श्री क्षीरोद कुमार साहु
प्रधान निदेशक (आई.टी.)
एन.आई.सी., कटक

हिन्दी भाषान्तर :
सुश्री धृतितपा साहु
चन्द्रादेईपुर, सालेपुर, कटक

बचपन में दोस्तों के साथ छोटी छोटी बातों में गुस्सा या अभिमान कर के उस से सामयिक रूप से वार्तालाप बंद करने के लिए 'कट्टी करना' एक अच्छा बहाना है। फिर अगर कुछ समय बाद वो दोस्त अपनी बातों या व्यवहार में सुधार लाता है, तो फिर से कट्टी मिट्टी हो जाती है और फिर देखते ही देखते दोस्ती में लौट आती है वो पहले की नजदीकियां, पलक झपकते ही। दिन भर कितनी बार ऐसे ही कट्टी और फिर से मिट्टी होती है, उसका हिसाब रखना शायद एक बच्चे के लिए मुमकिन नही है। कट्टी डालने के बाद चेहरे पे नाराजगी जताते हुए, वो दोस्त से मुंह फेर ली जाती है और बीच बीच में उसकी ओर ताकते हुए जताया जाता है की ' मैं नाराज हूं तुमसे। मुझे मनाओ!!' नही तो उसपे इसकी प्रभाव कैसे रहेगा? उसी वक्त, हंसना बिल्कुल ना के बराबर होता है, नही तो वो बीच की दीवार का अहमियत कम हो जाने की संभावना बहुत होती है। फिर क्या? बेचारा वो अपने पीछे पीछे लगा रहता है, स्वादिष्ट भोजन के बदले बीच की दूरियां हटाने के लिए वकालत करता है। बेशक अंत में कट्टी मिट्टी हो जाती है। आम तौर पर, इस 'कट्टी मिट्टी' का व्यापार अगले दिन तक नही टिकती।

बचपन का ये बचपना बचपन में ही कही खो जाता है। जब बड़े होते हैं तो ये बचपना से ज्यादा और कुछ नही लगता। पर कभी कभी ऐसा भी होता है की, जीवन में इस बचपना का समयसीमा काफी लंबी हो जाती है, नफरत,नाराजगी या फिर किसी और के वजह से।

साल 1984 की बात है। तब मेरा इंटरमीडिएट द्वितीय वर्ष चल रहा था। मैं बी.जे.पी महाविद्यालय के छात्रावास में रह रहा था। मेरे अलावा मेरा एक और साथी, अक्षय, एक ही कक्ष में रहते थे। अक्षय, अर्थात अक्षय महापात्र। प्यार से मैं उसे "अखी" बुलाता था । वो लड़का राजसुनाखला का निवासी था। हम दोनों एक ही श्रेणी के होते हुए भी, अलग अलग सेक्शन में पढ़ते थे: उसका जीवविज्ञान फोर्थ ऑप्शनल था और मेरा मानवशास्त्र। हमारा अन्य विषयों समान हुआ करता था, तो एक साथ पढ़ना फायदेमंद था। सच बोला जाए तो, मैं थोड़ा हंसमुख स्वभाव का था और वो थोड़ा गंभीर स्वभाव का था। हमारे स्वभावों में ये फर्क होते हुए भी, हम में दोस्ती बहुत गहरी हुआ करती थी। मेरे हंसी मजाक और चुटकुला से वो आनंद लेता था। ऐसे ही हमारा पढ़ाई आगे चली जा रही थी। हमारा टेस्ट परीक्षा खत्म हो चुका था और बस दो या डेढ़ महीने का समय था अंतिम परीक्षा होने को।

एक दिन की बात है, जब मेरा और एक दोस्त मेरे पास

आया हुआ था पढ़ाई संबंध कुछ विचार विमर्श करने के खातिर। महत्वपूर्ण विषयों की चर्चा खत्म होते ही हम दोनों कुछ पल के लिए ऐसे हसी मजाक में डूब गए। अखी वहां मौजूद होते हुए भी हमारे चुटकुले में शामिल नही था। दोस्त के विदाई के बाद, मैं कुछ अखी को बोलूं, उसे पहले वो आग बबूला होकर कहा," तू मुझे शायद किसी कुत्ता या बंदर समझ रखा है,नही तो ऐसा व्यवहार क्यों करता?!" वो ऐसा क्यों कहा, वह मेंरे सोच के परे था। मैं कुछ देर खामोश रहा। मन ही मन यही सोच रहा था की जो समय मैं वह आया हुआ दोस्त से साथ गुजारा था, उसकी वजह से शायद अखी मुझसे नाराज है। मैंने अखी से पूछा," मेंरे से तु इतना नाराज क्यों है? हैं, माना कि तु हमारे बातचीत से डिस्टर्ब हुआ होगा, लेकिन अब तक मैंने तो तुझे कुछ कहा भी नही।" तब तक वह गुस्से से लाल हो चुका था। वह बोला," सुन,मुझे तेंरे बातों में कोई दिलचस्प भी नही है। तू अपने आप को समझा क्या है,जो तुझे हर कोई नीचा दिख रहे हैं?!"

मेरा इतना अच्छा दोस्त जब मुझपे गुस्सा कर, जहरीला बातें कह जा रहा था, मैं बिलकुम चुपसा खड़ा था। धीरे धीरे आंखे भर आ रही थी, कुछ साफ दिख नही रहा था आंसुओं की वजह से।

खुदको संभालते हुए,कुछ देर बाद मैंने कहा," मुझे मालूम नही था की तुझे मेरी बातें इतनी बुरी लगेगी। ठीक है फिर,अगर ऐसा है तो, आइंदा मैं तुझ से बात नही करूंगा।" अब उसका गुस्सा और भी बढ़ चुका था, उसने कहा, " असल में, मैं भी वही चाह रहा था। तू बात ना करे तो मेरा कुछ उखड़ नही जायेगा।" बस ! अखी और मेरा उसी पल से कट्टी हो गया।

रात को आखों को बिलकुल भी नीद नही आ रही थी। मैं खुद से बहस किए जा रहा था अपने व्यवहार और बोलचाल को लेकर। खुदको गुनहगार मान कर ये फैसला लिया, "मुझे खुदको सुधारना होगा।"

दिल और भी घायल हो गया, जब अखी हमारा कक्ष बदल कर पास वाली कक्ष में अपना बिस्तर और सारा असबाब ले गया। अब उसका और मेरा कदाचित सामना होता था। अगर कभी भी हम एक दूसरे की सामने आ जाते थे तो, मैं उसके आखों में आंखें डालकर नही देख पा रहा था।

उस घटना के बाद, अपने कक्ष में हंसी मजाक करना बंद हो गया। अगर बाहर से कोई दोस्त आता था, उसे छत पे लेकर उस से वही बातें करता था मगर कक्ष में बिल्कुल भी नही। धीरे धीरे अखी और मेंरे बीच जो गहरा संबंध था, समय के साथ साथ उसका रंग उतर रहा था। जैसे अखी और मैं अनजान हो चुके थे एक दूसरे के लिए। उस दिन का उदासी अब मुझमें न था। अगर कुछ था, तो था एक गुनहगार होने का भाव।

सर पे परीक्षा का बहुत बड़ा बोझ था, तो मैं भी पढ़ाई में लगा रहा था। थियरी परीक्षा के बाद प्रैक्टिकल परीक्षा। अखी से कट्टी होने के बाद कब और कैसे डेढ़ महीने बीते गए, कुछ पता ही न चला। वह जो भी हो, परीक्षा के बाद हमे छात्रावास खाली करने के लिए नोटिस जारी किया गया।

उस दिन दोपहर को मैं और एक दोस्त मिलकर अपना

सारा असबाब बांध कर तैयार कर लिए। जब पिताजी उनके ऑफिस खत्म करके आएंगे तो मैं भी निकल जाऊंगा। बाकी का समय मैं उस दोस्त के साथ छत पर बातचीत में लगा रहा। शाम को पिताजी हमारे छात्राबास के नीचे पहँच गए और मैं भी उनको देख, अपना बंधा हुआ असबाब को नीचे लाने के काम में लग गया। वह दोस्त भी मेरा मदद कर रहा था। आखरी बैग को ला कर सीढ़ी पर रख ही रहा था, मैंने देखा अखी मेरे पीछे पीछे चला आ रहा है। अब मेरे अंदर भाव नही था क्योंकि मेरे लिए उसके मन में जो भी नफ़रत था, वह मुझे उससे काफी दूर धकेल चुका था।

लेकिन एक अकल्पनीय घटना घटी, जब अखी मुझे पीछे से जकड़ करके जोर से रोने लगा। अखी का यह व्यवहार देख के पहले तो मैं दंग और बाद में भावावेश रह गया । अब मेरे आखों में आंसू आ चुके थे । वह दिन अखी का वह कठोर और रुखा बर्ताव से मेरे मन में जमा हुआ हिमालय आकार के अभिमान, जैसे एक ही झटके में पिघल कर मेरे आंखों की आंसुओं की तरह बह जा रहे थे। जैसे हम दोनो ही मुंह से आवाज निकालने के लिए असमर्थ थे। वह रोते हुए,एक उदासीन स्वर में पूछा,"उस दिन, थोड़ा सा क्या गुस्सा किया तुझपे, तो आज तू मुझसे ऐसे ही बिना बात किए चला जायेगा?" मेरी आवाज कांप रही थी। बड़े मुश्किल से उसे कहा, "देख, तेरा वह बातों से मेरे मन को बहुत चोट पहंची है। अगर तुझे वह हसी मजाक पसंद नही था, तू मुझे अच्छे से भी बोला होता तो में खुदको सुधार चुका होता। अखी और जोर से रोने लगा। अब मैंने भी उसे मेरे बाहों में जकड़ लिया। उसे कहा, "अच्छा चलता हूं,अखी ! अब कट्टी हटा ली मैंने । अब तू खुस हैं ना?" मुझे विदाई देने के लिए अखी आ रहा था, भरी हुई आंखों के साथ।

मुझे देर होते देख अब पिताजी भी चिढ़ चुके थे, मेरा सारा सामान रिक्से में लादकर, मैं और पिताजी बैठ गए और गाड़ी भी आगे चल दी। पहले मोड़ पर मैंने पीछे मुड़ कर देखा, अखी खड़ा हुआ था वैसे ही, जब तक हमारा रिक्शा उसके आंखों के सामने से चला न गया हो । मैं मन ही मन में सोच रहा था," मैंने कट्टी तो हटा लिया,पर अखी से फिर बात कैसे करूं ? फिर एक बार मिले तो सही ! "

उपहार

श्रीमती ममता खमारी
वरिष्ठ निदेशक (आई.टी.)
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

दादाजी घर के अंदर आते आते माँ को आवाज दी "बहू, नीनाकी होस्टेल जाने की तैयारियां हो गई क्या?" नीनाकी माँ ने सर पर पल्लु डालते हुए रसोई घर से निकल कर बोली "हाँ बापुजी, सब कुछ हो गया है। केवल ...." दादाजी ने नीनाकी माँ को अपने साड़ी की आंचल में आंसू पोछते देख पूछे "क्या हुआ बहू ? क्यों रो रही हो ?" सिसकियां रोकते हुए नीना की माँ बोली "नही बापुजी, ऐसी कोई बात नही है , आज तक उसे खिलाना पड़ता है। अपने हाथ से भोजन करती नही यह लड़की। वह हर चीज़ पूछती है। हर काम इजाजत लेकर करती है। हमारी छोटी सी बच्ची नीना खुद को होस्टेल में कैसे संभाल सकेगी बापुजी?"

उस समय गाँव में टेलीफोन की कोई सुविधा भी नही थी। नीना के पिताजी ने कहा "बिटिया का कोई भी संदेश पोस्ट के माध्यम से प्राप्त होने में कम से कम 7 दिन लगेंगे। जब उसे कोई परेशानी होगी तो हम उसकी तुरंत मदद कैसे कर सकते हैं ? लेकिन किसी भी तरह वह अपनी उच्च शिक्षा के लिए हॉस्टल तो जायेगी ही।"

सबकी बात सुनने के बाद दादी ने कहा "मेरी बात सुनो, इसे पढ़ने के लिए शहर मत भेजो। इसकी शादी करा दो।"

इतने में रसोईघर के दरवाज़े के पीछे से नीना की माँ बोली "नही माँजी, समय और परिस्थिति के अनुसार वह सीख लेगी और संभाल लेगी अपने आपको।" शायद वह सोच रही थी कि हॉस्टल ससुराल से कही बेहतर होगा।

इन सब को अनदेखा करते हुए दादाजी लाल कपड़े में एक किताब लपेट रहे थे और मुस्कुरा रहे थे।

संध्या का समय था, नीना की माँ तुलसी के सामने दीप जला रही थी। अगले दिन सुबह नीना हॉस्टल जाने वाली थी।

दादाजी ने नीना को बुलाया और लाल कपड़े में लिपटी हुई वह किताब देते हुए बोले "इसे ले गुड़िया , यह भविष्य में तुम्हारा मार्गदर्शक होगा। जब भी तुम्हारे सामने कोई भी समस्या, सवाल आएगा तो उसका समाधान और उत्तर तुम्हें इस पुस्तक में ही मिल जाएगा।"

नीना को दादाजी का वह अनमोल उपहार था, "भगवत गीता" और 42 साल के बाद, आज भी नीना ने उसे बहुत संभालकर रखी है।

पहाड़ों में कुछ अनुभूति

सुश्री स्निग्धा आचार्य
उप-महानिदेशक
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

दैनिक जीवन के आवा जाही के दौरान कई बार मनुष्य का बोरियत और खालीपन से सामना हो जाता है। इस खालीपन को भरने के लिए अक्सर परिवर्तन की चाह उमड़ आती है। मन में स्थान और हवा पानी के परिवर्तन की इछाएँ आने लगते हैं। मन चाहता है कि कही दूर पहाड़ों में जाया जाय और अपने जीवन को और भी रोमांचित किया जाए।

यह इछाएँ कभी कोई लम्हा में महसूस हो कर दबी रह जाती है और फिर जिंदगी के स्रोत में मौका आपके सामने प्रस्तुत हो जाती है , या फिर आप मन में ठान ही लेते हैं कि, नही अब तो खुद को कुछ करना है क्यों कि जीवन में बहुत सारे मौके आते रहते हैं। खैर स्थिति जो भी हो, इस बार मौका ने दस्तक दे ही दिया। सहेलियों के साथ छुट्टी के दिन गप शप करते हुए वीकेंड में कही चला जाए की आइडिया बन उठी ।और वार्तालाप करते हुए यह स्थिर हुआ कि अब कही दूर पहाड़ों में चलते हैं। इस संदर्भ में उत्तराखंड (तब की उत्तरप्रदेश) स्थित केदारनाथ के पहाड़ों में जाना स्थिर हुआ। यात्रा में किस तरह चलना है उसकी योजना कि गयी। यात्रा की तयारियाँ करने में सभी जुट गए और वाहन में जाने की व्यवस्था भी कर लिया गया। इस में कुछ निजी बस ऑपरेटर की मदद लिया गया जो उस सेक्टर में यातायात करते थे। पहाड़ों में चढ़ाई के दौरान जरूरतों को नजर में रखते हुए शीत वस्त्र, जूते आदि चीजों को समेटने में सभी लग गए।

अब वो दिन भी आ गया जब हमें यात्रा करना था। सभी सहेलियाँ भी बस के आने की बेसब्री से प्रतिक्षा कर रहे थे। देखते ही देखते सामने बस आती हुई दिख गयी। बस में और भी यात्रि पहले से सवार थे। मन में उत्साह और जोश की लहर उठी रही थी।। बस के रुकते ही

सभी अपने सामान को लगेज़ सेक्शन में लगा कर अपने अपने सीट पर सवार हो गए। और मन को छूती हुई बद्रीनाथ जी की बन्दना को सुनाती हुई सभी सवारियों को ले कर बस चल पड़ी। रात की काली अंधकार में बस चलती रही और कब आँख लग गयी पता नही चला। जब आँख खुली सुबह की रोशनी में सभी नजारे बस पहाड़ों की थी। बस पहाड़ों पे चलती जा रही थी और बस की विंडो सीट से पहाड़ों और नीचे

बहती हुई भागीरथी की सिनेरी बहुत ही सुंदर दिख रही थी। प्रकृति की इस सुंदरता से आँख हट नहीं रहा था। बढ़ते हुए बस आगे उस पहाड़ में चलने लगी जहां नीचे मन्दाकिनी नदी बहती जा रही थी और प्राकृतिक सुंदरता चारों और विद्यमान थी। यात्रा की थकान दूर करने के लिए, रात एक छोटे पहाड़ी विश्रामागर पर रुक गए । सुबह फिर बस गौरी कुंड की और चल पड़ी। गौरी कुंड बस का आखिरी स्टॉप था। यहाँ पर यात्रि सभी उतर गए। यहाँ से शुरु होता था केदारनाथ के पहाड़ियों की चढ़ाई। सभी यात्री अपने अपने जरूरत के अनुसार सवारी, घड़ा, पिठ्ठू आदि की व्यवस्था करने के बाद पहाड़ी में चढ़ने लगे।

हम भी पहाड़ की चढ़ाई करने लगे। कुछ दूर चलने के बाद सभी को लगा कि जो हैंड बैग ले के चल रहें थे उसके लिए थकान हो रही थी। इसके लिए वहाँ पर चल रहे घोड़ों की मदद ली गयी और हमारे टीम में सभी जन अपने साथ जो भी बैग ले कर चल रहे थे उसे उसके हवाले कर दिये गए । अब इन सब भारी चीजों से फ्री हो कर हम आगे बढ़ते रहे , प्रकृति की सुंदरता को उपभोग कर रहे थे। तापमान कुछ कम हने लगा था और ठंड लगने लगी थी।

सभी चलते जा रहे थे , चलते चलते सभी अपने धुन में बढ़ रहे थे। हमारे कुछ मित्र दूर पीछे रह गए थे और कुछ आगे बढ़ गए थे। पहाड़ियों में चलते हुए नीचे मन्दाकिनी नदी की गर्जन और बनस्पतियों की गहनता जनित अंधकार से एक अद्भुत भय भी हो रहा था। वही पर दूर पहाड़ियों स्थित जंगल और उस पर निखरी सूरज की किरण का मनोरम दृश्य हमें रोमांचित कर रहा था।

चलते चलते कुछ दूर आगे बढ़ने के बाद कोहरा छाने लगा। सामने की दृश्य धूमिल होने लगा। मन में थोड़ा सा भय भी होने लगा। कई बार मन में प्रश्न उठ रहा था कि यहाँ कोई खतरा तो नही ? खैर इस के बावजूद भी हम बढ़ते जा रहे थे।

कुछ दूर आगे बढ़ने के बाद आगे एक पहाड़ी शेड दिख गयी जहां से अंगीठी की धुआँ उठ रही थी। वहाँ पर चाय की दुकान मोजूद थी। चाय वाले से हमने एक कप चाय ली और वही पर बैठ कर चाय की चुसकियाँ लेने लगे। इलाईची और धुआँ की सुगंध से वह चाय कुछ अलग ही लग रही थी। सब लोग ठिठुरती ठंड में गरम चाय और सुंदर प्रकृतिक नजारे की लुफ्त उठाने लगे।

मजा आ गया !

चाय के बाद हम फिर आगे बढ़ने लगे। अब सामने का

नजारा क्लियर था। चलते चलते कुछ झरने दिखने लगे जिसे हम पैरों से चल कर क्रॉस किए। पहाड़ से गिरती हुई जल की धारा एक मधुर अनुभूति दे रही थी। कुछ दूर चलते ही ऊपर से गिरे हुए पत्थर और पहाड़ के टुकड़े दिखे। यह सब यहाँ का रेगुलर दृश्य था। मन में आशंका भी होता था कही आगे कुछ बड़ा सा पत्थर न गिर पड़े। खैर इस को पार करते हुए हम आगे बढ़े। शाम होने को चली थी। कोहरा छाने लगा था। आगे से भेड़ियों का झुंड आ रहा था और सामने एक झरना बह रही थी। बहुत ही सुंदर क्षण था। मन मोहक दृश्य ! मन कर रहा था कि कुछ समय के लिए यहाँ ठहर जाएँ।

खैर आगे बढ़ना था। अब शाम हो गयी थी। आगे कुछ दिख नही रहा था। हम बस गंतव्य पथ पर अंधेरे में अनुमान लगाते हुए चले जा रहे थे। कल कल करती झरनों की ध्वनि से वातावरण गुंजायमान था। दूर से केदारनाथ का आलोक दिखने लगा था। जो आशंका मन में थी अब वो हट गयी थी और आगे पथ प्रशस्त था। धीरे धीरे बढ़ते हुए हम अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच ही गए।

अगले दिन केदारनाथ जी के दर्शन कर मन परिपूर्ण हो गया। मानो हम जिस उद्देश्य से यात्रा में चले थे वो पूर्ण हो गया। अब लौटना था। सो हम जिस जगह पर रुके थे वहाँ से अपना सामान ले कर निकल पड़े।

अब सुबह की सुंदर नजारा चारों और बिखरा हुआ दिखाई दे रहा था। अब पहाड़ की ढलान से उतरना आसान हो गया था। हम धीरे धीरे उतरते हुए शाम हो गयी थी। हम गौरी कुंड पहुँच गए थे जहां हमारी बस इंतजार कर रही थी। यात्रा की अंतिम चरण पर हम पहुँच चुके थे।

यात्रा की सुखद अनुभूति ले कर हम अपने अपने घर की ओर चल पड़े। आज भी हम फुर्सत में पहाड़ों की वादियों में, प्रकृति की मनोरम शोभा में, इस केदारनाथ यात्रा में गुजरे हुए सुंदर लम्हों की अनुभूति को याद करके खुश होते हैं।

विविध
(अनुक्रमणिका)

शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
राजभाषा हिन्दी के विविध व्यवहार क्षेत्र	डॉ. अलका प्रधान	26
स्मरणिका		32
हस्त - चित्रकला	सुश्री धृतितपा साहु	38
कृतज्ञता	श्रीमती सुजाता दास	39

राजभाषा हिन्दी के विविध व्यवहार क्षेत्र

डॉ. अलका प्रधान
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

समय के साथ भाषा और उसके दायित्व भी बदलते हैं। आधुनिक विश्व जब विचार दर्शन और ज्ञान के अनेक क्षेत्र से जुडा, तब भाषा चिंतन में भी व्यापक बदलाव आये । आज वैश्वीकरण, बाजारवाद तथा तकनीकी क्रांति ने आधुनिक भाषाओं के सामने चुनौतियाँ खड़ी कर दी है। ऐसे में हर जीवंतभाषा के लिए यह जरूरी हो गया है कि वह अपनी पूरी भाषिक संरचना को त्वरित गति से नए – नए मोड दे और यह साबित करे कि भाव ही नहीं बुद्धि को भी अभिव्यक्त करने की अटूट सामर्थ्य है।

हिन्दी भाषा के संदर्भ में हम पाते हैं कि यह सिर्फ साहित्य की नही, बल्कि ज्ञान-विज्ञान, संचार, सूचना, खेलकूद तथा विज्ञापन के क्षेत्र में अपनी भूमिका बखूबी निभा रही है। इसमें इन सभी क्षेत्रों के विषयों को अभिव्यक्त करने की पूरी सामर्थ्य है। हिन्दी के संदर्भ में इस सच्चाई को स्वीकारने के बाद ही आजादी के बाद राजभाषा हिन्दी के मानकीकरण और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया शुरु हुई । इसने भाषाविदों का ध्यान प्रयोजनमूलक हिन्दी के स्वरूप, गठन और उसकी विभिन्न प्रक्रियाओं के विवेचन, विश्लेषण की ओर आकर्षित किया। अत : हिन्दी के विभिन्न व्यवहारों को प्रयोजनमूलक हिन्दी कहते हैं। उसका व्यवहार शिक्षा, व्यापार, मनोरंजन, प्रशासन, प्रद्योगिकी, ज्ञान-विज्ञान आदि के क्षेत्रों में फैला हुआ है । प्रयोजनमूलक हिन्दी की अपनी विशिष्ट शब्दावली एवं पदावली होती है । इसके माध्यम से प्रशासनिक तथा विज्ञान एवं प्रद्योगिकी संबंधी क्रियाकलापों को अभिव्यक्त किया जाता है।

किसी भी भाषा को सशक्त एंव जीवंत बनाए रखने के लिए उसके व्यवहार पक्ष या प्रयुक्ति पक्ष का बलशाली होना आवश्यक होता है। आज विश्व में बहुत –सी ऐसी भाषाएँ हैं जिनमें महान रचनात्मक साहित्य लिखा गया किन्तु व्यवहार में उनकी प्रयोजनीयता सीमित रही है। अनेकों कमजोर अनुप्रयुक्त पक्ष के चलते शासन, विज्ञान, तकनीकी, खेलकूद एवं व्यवसाय के क्षेत्रों में उनका व्यवहार ही नही किया जाता । हिन्दी के प्रयोजनमूलक स्वरूप का इतनी तेजी से विकास होने का कारण यह है कि यह जीवन और समाज से जुड़े सभी क्षेत्रों की समस्याओं को सफल अभिव्यक्ति देने लगी है। विभिन्न चुनौतिओं का सामना करते हुए वह निरंतर विकासशील है।

संविधान ने जिस हिन्दी को भारत के संघ की राजभाषा के रूप को मान्यता दी है तथा जो विभिन्न ज्ञान-विज्ञान क्षेत्रों में प्रयुक्त हो रही है वह खड़ीबोली हिन्दी का ही

मानक रूप है। खड़ीबोली अब भी उत्तर भारत के विभिन्न भागों की जनता में व्यापक रूप से बोली जाती है। वह विकसित एवं समृद्ध भाषा है। भाषा और साहित्य के स्तर पर इसका इतिहास पुराना है। आज जीवन के सामाजिक स्तर में जो बदलाव हो रहे हैं तथा विज्ञान एवं तकनीक का जो विकास हो रहा है, इन सब को अर्थवत्ता प्रदान करने में हिन्दी भाषा अग्रणी है।

सूचना क्षेत्र की हिन्दी जिज्ञासा मानवी प्रकृति है। सदियों से मानव कुछ नई जानकारी ग्रहण करने के लिए हर तरह से प्रयत्नशील रहता आया है। सूचना में कितनी और क्या शक्ति होती है यह किसी से छिपा नही है। अर्थात सूचना एवं विविध नूतन जानकारी के अभाव में आधुनिक समाज कभी प्रगति नही कर सकता और यही कारण है कि वह सूचना को जानने हेतु सदैव लालायित रहता है। आधुनिक युग में व्यक्ति को जोड़ने और कुछ हद तक तोड़ने में सूचना-विज्ञान की भूमिका में बदलाव होता जा रहा है। वैज्ञानिक प्रगति ने आज जग को समेट लिया है। देश-विदेश के किसी कोने में घटित घटना चाहे वह अच्छी हो या बुरी, सूचना-विज्ञान क्षण भर में उससे प्रभावित करता है क्यों कि यह सूचना क्रांति का दौर है।

भारत में भाषा प्रद्योगिकी के क्षेत्र में पर्याप्त विकास हो रहा है। सूचना तकनीकी के क्षेत्र में भारत और चीन विश्व के विकासशील देशों में अग्रणी हैं। हिन्दी में विश्वकोश, सूचना तकनीकी शब्दावली तैयार है। ई.मेल (E.mail) की भी सुविधा है। एम.एस ऑफिस,एक्स पी,ओरॉकल,विजुअल वेसिक,वी बी डॉट नेट,ए एस पी, जावा आदि सैकड़ों सॉफ्टवेयर के हिन्दी संस्करण उपलब्ध हैं। सूचना क्रांति से संबंधित राजभाषा (प्रयोजनमूलक) हिन्दी के चार भेद हो सकते हैं – मिडिया और जनसंचारी हिन्दी, तकनीकी हिन्दी,प्रशासनिक हिन्दी और वाणिज्यिक हिन्दी। अब कंप्यूटर पर हिन्दी शब्द संसाधन (वर्ड प्रोसेसर) डेटावेस प्रबंधन (Database Management) प्रकाशन, पेजिंग आदि संभव है। कंप्यूटर की ही भांति रेडियो और टेलिविजन हिन्दी सूचना प्रद्योगिकी के सशक्त साधन सिद्ध हो रहे हैं। कंप्यूटर से लेकर सैटलाइट के बीच अब हिन्दी को इंटरनेट, वीडियो टैक्सट, टैलेक्स, टेलिप्रिंटर, ब्रॉडबैंड, वीडियोफोन, टैलि कांफ्रेंसिंग, टेलिटैक्सट, फैक्स, केबल टीवी, ई-मेल, सेलुलर फोन, पेजर, आदि सेवा – सुविधाएं प्राप्त हैं और इनका उपयोग खुल कर किया जा रहा है। दुनिया अब छोटी हो गयी है। " विश्व ग्राम " के इस दौर में खबरें अत्यंत द्रुतगामी हो गयी हैं। अब चाहे अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर घटने वाली घटना हो या गुजरात में होने वाला भयंकर भूकंप या ओड़िशा की प्रलयंकारी महावात्या हो, 21वी सदी में तो सूचना – विज्ञान ने जन संपर्क को सहज और सुगम बना दिया है। प्राचीनकाल में भी सूचनाएं आदि एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचायी जाती थी, मगर इस तेजी से कदापी नही। मुद्रणकला के तकनीकी विकास से भी सूचना-विज्ञान में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है।

विज्ञान ने आज इतनी प्रगति कर ली है कि है कि संचार साधनों जैसे मुद्रण माध्यम, टेलिप्रिंटर, टैलेक्स,

टेलिफोन, कार्डलैस फोन, मोबाइलफोन, रेडियो, टेलिविजन, फैक्स, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि के जरिए छोटी-बडी सूचनाएं तीव्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर, एक देश से दूसरे देश में सहजता से उपलब्ध करायी जाती हैं। सिर्फ इतना ही नही लोकमत को बनाने या विकसित करने में सूचना-विज्ञान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैज्ञानिक प्रगति एवं संचार माध्यमों ने आज के इस आपाधापी वाले माहोल में व्यक्ति के समक्ष विविध प्रकार की सूचनाओं का ऐसा जाल फैला दिया है कि व्यक्ति इससे कट कर जी नही सकता। सूचना तंत्र ने बड़ी तेजी से जीवन के प्राय : सभी क्षेत्रों को अपने दायरे में समेट लिया है । घर घर में सूचनाओं का विस्फोट हो रहा है । अतः हम यह कह सकते हैं कि 21वीं सदी के सूचना जाल में जीने के लिए जनसंचार माध्यमों का ज्ञान अपरीहार्य हो गया है । सूचना माध्यमों में समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का भी अपना एक विशिष्ट महत्व एवं योगदान है। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जनमत की आवाज को व्यक्त किया जाता है। यह ज्ञानवृद्धि का एक सुलभ माध्यम बन गया है। इलेक्ट्रानिक माध्यम, दूरदर्शन, रेडियो, कंप्यूटर, इंटरनेट का दायरा इतना बढ़ गया है कि इंटरनेट पर अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों को पढ़ा जा रहा है।

सूचना क्षेत्र में रेडियो/टेलिविजन का भी महत्वपूर्ण योगदान है । आज सूचनाओं और विभिन्न कृषि कार्यक्रमों के माध्यम से कृषकों ने भी नए-नए तरिके अपनाकर काफी विकास किया है । आकाशवाणी/ दूरदर्शन द्वारा हिन्दी में प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों एवं सूचनाओं ने उनके सामाजिक और आर्थिक जीवन को काफी हद तक परिवर्तित किया है। देश में किसी विशिष्ट व्यक्ति के साथ घटने वाली घटना, दंगे, फसाद, बाजार भाव आदि जानने व मनोरंजन हेतु आज भी भारत ज्यादातर आबादी टेलिविजन पर आश्रित है। आम आदमी के लिए इससे सहज सुलभ मनोरंजन एवं सूचना प्राप्त करने का माध्यम और क्या हो सकता है ? आज के इस भाग दौड़ वाली जिंदगी में आदमी के अकेलेपन को काफी हद तक तोड़ने में रेडियो,टेलिविजन,कंप्यूटर बढिया साथी की भूमिका निभा रहे हैं। टी.वी/कम्प्युटर/मोबाइल फोन आज घर के सदस्यों की भांति जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। टीवी के बढ़ते चैनलों के हिन्दी कार्यक्रमों ने बड़े, बच्चे, जवान सभी को कुछ हद तक अपनी गिरफ्त में कर लिया है, सिर्फ मनोरंजन ही नही बल्कि ज्ञान-विज्ञान की नयी–नयी जानकारियां हमें हिन्दी में जानने को मिल रही है। आज हिंदीतर भाषा-भाषी क्षेत्र ही नही, देश-विदेश में भी हिन्दी दूर दूर तक फैल रही है। जो लोग हिन्दी नही जानते वे भी इसे समझने और समझाने लगे हैं। इतना ही नही हिन्दी के प्रसार में हिन्दी फिल्मों के योगदान को भुलाया नही जा सकता।

जनसंचार माध्यम का प्रधान प्रयोजन जन, राष्ट्र एवं विश्व के विकास से जुड़ा है। सुविधा, मनोरंजन एवं जन कल्याण जन संचार के मुख्य लक्ष्य हैं। ज्ञान-विज्ञान तथा व्यावहारिकता से संबंधित उन सब विषयों से परिचित कराना इसका मुख्य लक्ष्य है जो विश्व के विशाल प्रागंण में बिखरे पड़े हैं। इतिहास, भूगोल, कला, साहित्य, संस्कृति, अध्यात्म और शिक्षा की

महत्वपूर्ण बातों को जन जन तक संप्रेषित करने हेतु जनसंचार माध्यम आवश्यक और अनिवार्य है । यह घटना और श्रोता के बीच का सेतु है।

सूचना क्षेत्र में हिन्दी अपनी सार्थकता और शक्ति निरंतर प्रमाणित कर रही है । हिन्दी भाषा की लचीली और उदार स्वभाव ने इस सूचना तंत्रिका महाविस्फोटक दर्शन को पचाकर अपनी असंदिग्ध भूमिका प्रमाणित की है । जन संचारी माध्यमों के अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर हिन्दी ने अपनी भूमिका खुद तय की है । प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया के अन्तः संबंधो के बीच हिन्दी ने ठोस सेतु निर्मित किया है । इल्क्ट्रोनिक मीडिया में दूरदर्शन का बहुत बड़ा योगदान है । परोक्ष रूप से वह भाषा के प्रचारक की भूमिका भी वहन करता है । भाषा को व्यापक धरातल प्रदान करने में , उसके फलने-फूलने में नया तथा उसे जनाश्रय प्राप्त कराने में दूरदर्शन का महत्व निर्विवाद रूप से मानना होगा । हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न भू प्रदेशों, विभिन्न भाषा-भाषियों तथा विभिन्न जाति - धर्मियों तक ले जाने का महत्वपूर्ण कार्य इसके माध्यम से अधिक सरलता,सहजता से संभव हुआ है । अतः हम कह सकते हैं कि सूचना प्रद्योगिकी से हिन्दी की व्यापकता को अनोखा आयाम मिला है । प्रभावी माध्यम की दृष्टी से यह माध्यम अन्य संचार माध्यमों की तुलना में बेजोड़ है , जिसका कारण इसकी बोधगम्यता की अपार शक्ति है । यह एक सच्चाई है कि इस माध्यम ने हिन्दी भाषा को जितने श्रोता दिए उतने और किसी ने नही । सूचना क्षेत्र में हिन्दी भाषा के विविध रूप इस संदर्भ में अगर हम दूरदर्शन को लें तो पायेंगे कि यह हिन्दी के विविध रूपों का वाहक है।

साहित्यिक हिन्दी : दूरदर्शन का माध्यम से अनेक श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं का प्रसारण हुआ है। जिस रचना को पढने के लिए लोगों ने हिन्दी सीखी थी, मैला आंचल, राग दरबारी, कर्मभूमि, निर्मला, गोदान, कब तक पूकारूँ, तथा तमस जैसी श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियाँ को दूरदर्शन का माध्यम न मिलता तो क्या ये साहित्यिक कृतियाँ इतने लोगों तक पहूँच पाती? रामायण तथा महाभारत के रचयिता आदि कवि वालमीकी और महर्षि व्यास से लेकर प्रेमचंद, शरतचंद्र जैसी भिन्न भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ प्रतिभाएँ हिन्दी के जरिए इस माध्यम पर व्यापक जनता तक पहुँच पायी है।

वैज्ञानिक हिन्दी : दूरदर्शन वैज्ञानिक हिन्दी का वाहक बन कर आता है। यू.जी.सी, इग्नो, के नियमित शैक्षिक हिन्दी कार्यक्रम रेडियो और दूरदर्शन से प्रसारित होते हैं । कुछ साल पहले दूरदर्शन पर हिन्दी में टर्निंग प्वाइंट के तर्ज पर हिन्दी में विज्ञान कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जाता था जो कि काफी लोकप्रिय था। इसमें विज्ञान संबंधी शैक्षिक, पहेली आदि कार्यक्रम प्रस्तुत होते थे। जरूरत इस बात की है कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी से संबंधित हिन्दी शब्दावली का व्यापक प्रचार ऐसे कार्यक्रमों द्वारा किया जाए जिसका निर्माण वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने किया है । विज्ञान के नए नए शोध,अनुसंधान तथा धरती से लेकर आसमान तक की जानकारी और उपग्रह आदि का सचित्र परिचय करा देने वाला यह माध्यम अपने आप में

एक अनोखा स्त्रोत है, जिसका स्थान आज कम्प्युटर एवं मोबाइल ने ले लिया है जैसे हमने देखा कि करोना काल में जब सारी दुनियां जूझ रही थी तब स्कूल/कॉलेज के बच्चों की पढ़ाई मोबाइल के माध्यम से ही किया जाता था।यहाँ तक कि करोना से पहले जिसे हम असंभव मान रहे थे , वह भी मोबाइल तकनीक से संभव हो पाया।

प्रशासनिक हिन्दी : जब से हिन्दी भारत की राजभाषा बनी है,तब से सरकारी कामकाज में इसके प्रयोग पर ज्यादा से ज्यादा बल दिया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर जब कोई सरकारी नीति तय होती है,नियम अथवा अधिनियम बनते हैं, उनकी जानकारी पूरे देशवासियों को देना आवश्यक होता है। चाहे गांव के सुधार हेतु पंचायतराज की कल्पना हो,प्रधानमंत्री ग्राम सडक योजना हो या चुनाव संबंधी कोई नयी या पुरानी नीति बन रही हो – यदि इसे जनता को अवगत कराना हो तो,इस माध्यम के सिवा दूसरा प्रभावशाली और सहज-सुलभ जरिया कुछ नही है। पर जहाँ तक प्रशासनिक हिन्दी का सवाल है, यह ज्यादातर अनुवाद की भाषा के रुप में प्रस्तुत होती है जो सुखद स्थिति नही है।

विज्ञापनी हिन्दी : भारतीय संदर्भ में विज्ञापन क्षेत्र के लिए हिंदी की अवश्यकता निर्विवाद है। हिन्दी भाषा विज्ञापन की अनिर्वायता है। मानो यह सूत्र-सा बन गया है। 'हिन्दी नही तो विज्ञापन नहीं' लाखों – करोड़ों के हृदय, मन और मस्तिष्क पर हावी होने वाले लक्स, लिरिल, डोव जैसे साबुन हों या कोलगेट, क्लोजॉप टूथ पेस्ट हो - सबके सब अपने अपने कारखानों और दूकानों में हिन्दी के बीना बंदी हैं। इसलिए यह कहना बिल्कुल गलत नही होगा कि हिन्दी विज्ञापन का अभिन्न अंग है और विज्ञापन का अस्तित्व हिन्दी के कारण सुरक्षित है। अत : यह कहना समीचीन होगा कि हिन्दी विज्ञापन को लोकप्रीय बनाती है और विज्ञापन से हर चीज लोकप्रीयता पाती है।

क्रीडा विषयक हिन्दी : हमारे देश में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेली जा रही खेल स्पर्धाओं का आँखो देखा हाल हिन्दी में प्रसारित किया जाता है। लोंगों के लिए हिन्दी में संप्रेषण अधिक होता है। चाहे फुटबॉल हो या हॉकी का गोल हो या क्रिकेट का विकेट हो,जब उसका आँखो देखा हाल हिन्दी में सुनाया जाता है तब भारतीय दर्शक उसका दुगुना आनंद लेते हैं। यह हिन्दी बोलचाल की सामान्य हिन्दी या खिचड़ी हिन्दी ही सही पर संप्रेषण क्षमता से भरपूर होती है।

परिनिष्ठित हिन्दी : ऐसा ही नही कि दूरदर्शन की हिन्दी सदा – सदा के लिए बोलचाल की, खिचड़ी, अशुद्ध अथवा बिगड़ी हुई ही होती है। हिन्दी के जितने रुप हैं उतने शायद ही किसी संचार माध्यम में प्रयुक्त हुए हों। सरकारी नितियाँ, शासकीय सूचनाएँ, आदेश, निवेदन, संकल्प तथा समाचार जैसे कई कार्यक्रम हैं जो सरकारी दूरदर्शन चैनेलों जैसे डीडी-1, समाचार लोकसभा, संसद आदि में प्रसारित होते हैं। इनमें मानक हिन्दी का ही प्रयोग किया जाता है।

फिल्मी हिन्दी : टेलिविजन जैसे सशक्त सूचना माध्यम के विविध चैनलों पर हिन्दी का यह लोकप्रिय रूप अधिक हावी है। हिन्दी फिल्में इसके विविध चैनलों पर दिन-रात चलते रहते हैं। फिल्मी हिन्दी को इस माध्यम ने न केवल घर घर पहुँचाया बल्कि इस जमाने में यंत्रवत जिन्दगी जी रहे, थके-हारे मानव का भी मनोरंजन किया है। बौद्धिकता के हिमायती और मानवता के विरोधी इस जमाने में व्यवस्था – पीड़ित मानव की मानसिक पीड़ाओं तथा विविध प्रकार के दबावों से छुटकारा पाने का, उसके दिल बहलाने और मनोरंजन के एक साधन के रूप में भी फिल्म को देखें तो निर्विवाद रूप से मानना पडेगा कि इस माध्यम से हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार होता रहा है।

सूचना क्षेत्र में और एक चीज की महत्ता सर्वविदित है और वह है कंप्यूटर । कंप्यूटर तार्किक शक्ति के भंडार का एक ऐसा मशीनी उपकरण है जिसके द्वारा संदेशों,सूचनाओं को आसानी से संग्रह किया जाता सकता है । एसे सॉफ्टवेयर और प्रोग्राम बनाए जा रहे हैं,जहाँ अंग्रेजी की तरह हिन्दी के शब्दों की स्पैलिंग, व्याकरण आदि की दृष्टी से कंप्यूटर के जरिये हिन्दी में वाक्य संरचना को दुरुस्त किया जा सकता है । टी.वी पर प्रसारित होने वाले अन्य भाषा के कार्यक्रमों का कंप्यूटर तकनीकी से तत्काल हिन्दी में स्क्रीन के निचले हिस्से प्रस्तुत किया जाता है जिससे प्रसारित कार्यक्रमों को समझने में सुविधा होती है । आज के संदर्भ में कंप्यूटर के साथ इंटरनेट का महत्व जग को सिमित कर दिया है । इंटरनेट ज्ञान का ऐसा सागर है, जिससे व्यक्ति आमने – सामने बातचीत कर सकता है । गोष्ठियाँ, व्याख्यान और सूचनाओं का आदान–प्रदान आदि विविध प्रकार के कार्यक्रम कर सकता है । इंटरनेट में ई-मेल के जरिए हम कुछ ही पलों में सूचना और संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान पर सरलता से भेज सकते हैं । हिन्दी में पावर प्वाइंट, एक्सेल, एक्सेस आदि की कंप्यूटरीय सुविधाएँ हैं, यद्दपि इनका व्यापक उपयोग नहीं किया जा रहा , चैट, टैम्पलैट, ऑटोटैक्सट, थिसारस, स्पैल चैक का भी यही हाल है । फिर भी हिन्दी भाषा शब्द संसाधन की दृष्टि से हिन्दी के लिए युनिकोड विकसित किए जा चुके हैं और काफी हद तक इसमें सफलता भी मिली है ।

इस प्रकार सूचना-विज्ञान से जुड़े सुविधाओं का विकास जिस तेज रफ्तार से हो रहा है, केवल नेट्वर्क की हिन्दी ने भी लोगों को जगा दिया है। सूचना-संचार माध्यमों द्वारा हिन्दी भाषा का जैसा उपयोग हो रहा है वह निश्चय ही हिन्दी के महत्व को उजागर करता है । सूचना प्रद्योगिकी के युग में प्रवेश के साथ-साथ हमें आने वाली शदी में उत्तोरतर प्रगति हेतु हिन्दी के उत्कर्ष को बढाने हेतु एकजुट होकर और अधिक प्रयास करना होगा । तभी वह दिन दूर नही जब हिन्दी को कंप्यूटर जैसे अत्याधुनिक विकसित संचार माध्यम की संपूर्ण भाषा बनने के मार्ग की सारी बाधाएँ दूर होंगी ।

स्मरणिका

हिन्दी कार्यशालाओं में बनाई गयी रंगोलियाँ

1 : हिन्दी कार्यशाला में मुख्य अतिथि का स्वागत

2: एन.आई.सी भुवनेश्वर में आयोजित हिंदी कार्यशाला

एन.आई.सी भुवनेश्वर में आयोजित हिंदी पखवाड़ा का समापन उत्सव

हिन्दी पखवाड़ा एवं कार्यशालाओं में पुरस्कृत होते हुए प्रतिभागी

एन.आई.सी भुवनेश्वर में हिंदी पखवाड़ा का समापन उत्सव के आयोजित
वृन्द-गान एवं लघु-नाटक

1 : एन.आई.सी भुवनेश्वर में हिंदी पखवाड़ा के आयोजित गीत-संगीत कार्यक्रम

2 : हिंदी कार्यशाला के दौरान हिंदी मासिक पत्रिका 'द आसेंडर' का उन्मोचन

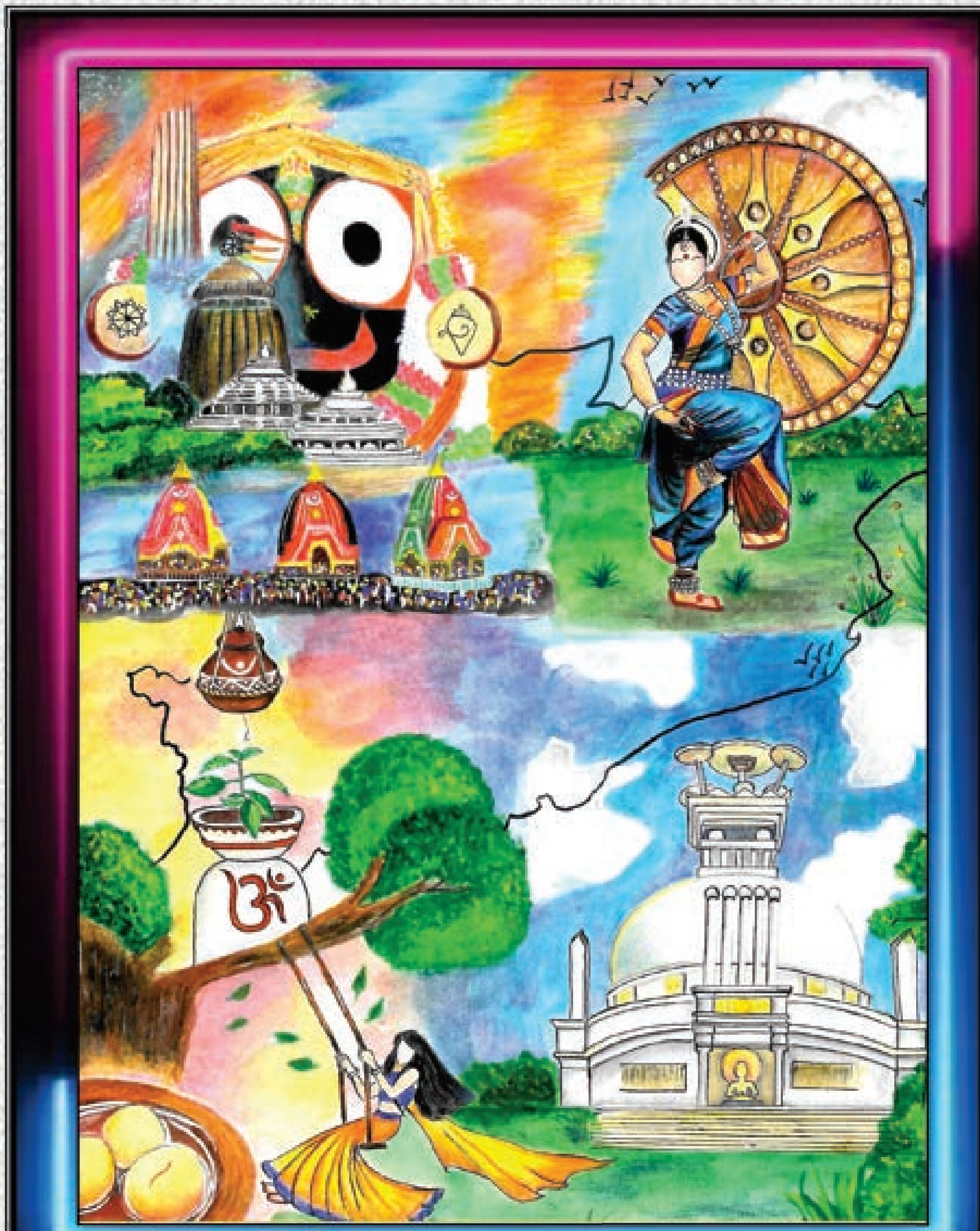

हस्त-चित्रकला — सुश्री धृतितपा साहु, चन्द्रादेईपुर, सालेपुर, कटक

कृतज्ञता

"जागृति" एन.आई.सी, ओड़िशा का प्रथम हिंदी पत्रिका, जो अपनी पहली सूर्य किरण देखेने जा रही है। यह हम सभी के लिए अत्यंत गर्व का विषय है। "जागृति – एक कदम सृजन की ओर" की रचना सभी एन.आई.सी, ओड़िशा के अधिकारी तथा सभी जिलाधिकारियों के सहयोग बिना संभव नहीं था । मैं इस अनूठे प्रयास के लिए आप सभी का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ । आप अपने बहुमूल्य समय से कुछ पल निकाल कर इतनी सुंदर कविता, कहानी आदि लिखे, यह आप का हिन्दी के प्रति अपार प्रेम और लगाव को सूचित करता है। इसके साथ-साथ, मैं, उप महानिदेशक तथा SIO महोदय डॉ. अशोक कुमार होता जी को भी दिल से धन्यवाद देती हूँ, जिनके मार्ग दर्शन तथा पूर्ण सहयोग से एन.आई.सी, ओड़िशा का प्रथम हिंदी पत्रिका प्रकाशित होने जा रही है। जागृति को सजाने, संवारने में श्री अजित कुमार पंडा, डॉ अलका प्रधान तथा हमारे एडिटोरियल टीम का अवदान सराहनीय है। अंत में आप सभी का, इस उम्मीद के साथ, मैं तहदिल से शुक्रिया अदा करती हूँ कि, आप सभी का कलम ऐसे ही बिना रुके सदा चलती रहे – नमस्कार और बहुत बहुत धन्यवाद।

श्रीमती सुजाता दास
वरिष्ठ निदेशक (आई.टी.)
एन.आई.सी., भुवनेश्वर

सत्यमेव जयते

जागृति

— एक कदम सृजन की ओर

© आन्तरिक प्रकाशन

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र
ओड़िशा राज्य केन्द्र
यूनिट — 4, सचिवालय मार्ग
भुवनेश्वर, ओड़िशा — 751001
दूरभाष: 0674-2508438

एनआईसी
National
Informatics
Centre